बी.ए.पार्ट1(हिंदी प्रतिष्ठा) प्रथम पत्र-डॉ०मनोज कुमार सिंह, राजा सिंह कॉलेज, सिवान।

कवितावली-तुलसीदास(प्रस्तावित प्रथम पद)

अवधेस के द्वारे सकारे गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे।

अवलोकि हौं सोच बिमोचन को ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक-से।।

तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन नैन सुखंजन-जातक-से।

सजनी ससि में समसील उभै नवनील सरोरूह-से बिकसे।1।

शब्दार्थ:-

अवधेश=अयोध्या के स्वामी(दशरथ),सकारे=प्रातः,अवलोकि= देखकर,सोच-विमोचन=शोक(दुःख) से मुक्त करने वाले, हौं=मैं, ठगि

सी रही=चकित रह गई , खंजन-जातक=खंजन नामक पक्षी का बच्चा ,रंजित अंजन नैन=काजल लगे नेत्र,उभै=दो,नवनील सरोरुह=नवीन नील कमल,विकसै=खिले हुए

प्रसंग - प्रस्तुत पद भक्तिकाल के सगुनभक्ति शाखा के लोकप्रिय कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित है । इस पद में सूरदास जी के कृष्ण के प्रति वात्सल्य वर्णन की तरह अनुकरण करते हुए राम के बाल्य रूप का वर्णन कर वात्सल्य के क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज की है।

व्याख्या :-इस कवित्त में एक सखी दूसरी सखी को सम्बोधित करते हुए कह रही है कि हे सखी! मैं सुबह अयोध्या के स्वामी दशरथ के द्वार पर गई थी । उस समय राजा दशरथ अपने पुत्र रामचन्द्र को अपनी गोद में लेकर भवन के बाहर निकल रहे थे। मैं तो शोक और दुःख से मुक्त कर देने वाले बालक रामचंद्र की शोभा देखकर चकित रह गई । उस अमिट छाप छोड़ देने वाली सौंदर्य को देखकर जो चकित न हो उसे धिक्कार

है । खंजन शावक के समान मन को लुभाने वाले काजल लगे उनके दोनों नेत्र उस समय ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो चंद्रमा में दो नवीन समान सौंदर्य वाले नीलकमल खिल गए हों।

विशेष :-1-मातृभाषा अवधी होने के बावजूद तुलसीदास ने ब्रजभाषा में कवितावली की रचना कर अपनी विस्तृत भाषा-दृष्टि का परिचय दिया है ।

2-सूरदास अपने कृष्ण के प्रति वात्सल्य वर्णन के कारण लोकप्रिय हुए। तुलसीदास ने ब्रजभाषा में सूर की तरह वात्सल्य वर्णन कर उनसे कवि-सुलभ होड़ लेते हुए अपनी कवित्व-क्षमता का प्रदर्शन किया है।

3- "नैन सुखंजन जातक से " में उपमा अलंकार और "ससि में समसील उभै ,नवनील सरोरुह से निकसै" में उत्प्रेक्षा अलंकार और पूरे कवित्त में अन्त्यानुप्रास का इस्तेमाल कर कवि ने इस कवित्त में कवितापन में वृद्धि की है।